Volume-5, No. II Aug.-2018, pp. Hin.31-33

# श्रीमद् भगवत गीता में शैक्षिक एवं नैतिक दर्शन

**डॉ0 राधा यादव**, ऐसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय बरेली।

प्रत्येक जीवन दर्शन एक निश्चित विश्वास पर आधारित होता है। यादि कोई मनुष्य विरोधी परिस्थितियों में शान्त रहता है और परेशान नही होता है, इसका अर्थ यह है कि वह सामान्य जवीन की कठिनाइयों को ठीक पृष्ठभूमि में देखता है, उसका जीवन दर्शन उपयोगिता पर आधारित है। हक्सले का कथन है– मनुष्य अपने जीवन–दर्शन तथा संसार के विषय में अपनी धारणा के अनुसार जीवन व्यतीत करता है। यह बात अधिक से विचारहीन लोगों के विषय में भी सच है। बिना आध्यात्मिक विचार के जीवन व्यतीत करना असम्भव है। हमें इस बात का चयन करने का अवसर नही दिया गया है कि आध्यामित्क विचार को ग्रहण किया जाये या नही, वरन् अच्छे आध्यामिक विचार तथा बुरे आध्यात्मिक विचारों में से चयन करने का अवसर दिया जाता है तथा उस आध्यात्मिक विचार को ग्रहण करने के लिए कहा जाता है, जो निरीक्षित और निष्कार्षित वास्ताविकता से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित होता है।

प्राचीन भारत में जीवन का परमलक्ष्य परमतत्व की प्राप्ति था।

इस कारण उस समय आध्यत्मिक एवं नैतिक उन्नति का आधारित शिक्षा की व्यवस्था थी। किसी राष्ट्र की संस्कृति, परम्परा एवं आध्यत्मिक चेतना उसकी शिक्षा के मूल आधार का दाायित्व वहन करते हैं। इसी से किसी भी राष्ट्र की अपनी अलग पहचान बनती है। शिक्षा के भारतीय स्वरूप का अर्थ एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था से है जिसकी साहित्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी एवं आध्यत्मिक शिक्षा पद्वति भारत की आवश्यकता के अनुकूल हो। भारतीय सभ्यता संस्कृति दर्शन व आकांक्षाओं पर आधारित हो भारत के सामजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं संस्कृतिक सभी दृष्टि से भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल हो, जिससे एक वर्ग, रूचि विचार, नैतिकता व विद्वता में विशुद्व भारतीय नागरिकों का निर्माण किया जा सके। अतः शिक्षा के लिए उपयोगी भारतीय तथ्यों को छोड़कर उपयोगी तत्वों को भारतीयता के साँचे में डालकर प्रस्तुत किया जाये।

भारत की शिक्षा प्रणाली पर आज भी विदेशी छाप है। स्वतन्त्र भारत के पास अभी तक भारतीय अथवा राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली नही है और शिक्षा नीति 1968, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और 1992 की कार्य योजना भी कुछ फेरबदल के साथ विदेशी शिक्षा प्रणाली हो चल रही है। और अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी बहुत बड़ा परिवर्तन करने में असमर्थ दिखाई दे रही है।

इस शिक्षा प्रणाली में एक रिक्त स्थान बहुत बड़ा है कि यह भारतीय संस्कृति और भारतवासियों की आवश्यकता और आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित नही करती । अतः एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को लाना चाहिए जिसमे भारतीय संस्कृति की छाप हो। भारतीय जीवन मूल्य, आदर्श नैतिक मूल्य, चरित्र निर्माण, आदर्श व्यक्तित्व का विकास करना, शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग होना चाहिए, तभी कोई व्यवस्था सफल कही जा सकती है। अतः देश के प्रमुख शिक्षाविदों, आचार्यो एवं लेखकों के विचारों एवं प्रमुख ग्रन्थों का अध्ययन कर ऐसी प्राचीन एवं वर्तमान विचारों का संयुक्त रूप प्रस्तुत किया जाये, जो अपनी शिक्षा प्रणाली में साफ दिखाई दे। उसके पश्चात् भारतीयों की आवश्यकता एवं आकांक्षाओं की दृष्टि से इस प्रकार चयनित विचारों का मूल्यांकन करके एक भारतीय दर्शन का निर्माण किया जाये इसकों उपयोगी पाश्चात्य शैक्षिक विचारों को भी सम्मिलित किया जाये।

आज भौतिक सुख सुविधाओं एवं साधनों को उन्नति का प्रतीक मान लिया गया है। परन्तु इन भौतिक संसाधनों से सुख नहीं प्राप्त किया जा रूकता। केवल भौतिक संसाधनों की उपल्बधता व्यक्ति के सुखी होने का प्रमाण नही है। परन्तु अब मनुष्य इस भौतिकवादी युग को छोड़कर अध्यात्म और दर्शन की ओर बढ़ता जा रहा है। इस जगत के बहुत से अनुभव मनुष्य को भागदौड़ भरी जिन्दगी से वापस पुरानी व्यवस्था में जाने को मजबूर कर रहे हैं। विज्ञान के चरम विकास के बाद भी मनुष्य को आत्मिक आनन्द एवं सन्तोष

का अनुभव प्राचीन विरासत में प्राप्त हो रहा है। अतः एक ऐसी विरासत तैयार की जाये, जिससे हम अपनी जड़ों को सीचते हुए एक बड़े वटवृक्ष की तरह हो जायें, जो मजबूती से किसी भी परिस्थितियों में अपनी जड़ो से जुड़ा रहता है। इस समय देश में ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो न केवल आर्थिक उद्देश्यों को पूरा करें, साथ–साथ ही हमारी राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को भी अक्षुण्ण बनाये रख सकें। देश से हिंसा, नक्सलवार, अपराध और अन्याय को दूर कर सकें।

इसलिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्रीमद् भगवत गीता में उल्लिखित जीवन आदर्शे एवं नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता प्रतीत होती है। श्रीमद् भगवत गीता हमारे धार्मिक ग्रन्थों का एक नायाब रत्न है। गीता साक्षात भगवान श्री कृष्ण के मुखर बिन्दु से निकली हुई वाणी है। इसके संकलनकर्ता श्री व्यास जी हैं। इसमें सम्पूर्ण वेदों का सार संग्रह किया गया है।

मानव मूल्य एक ऐसी आचार संहिता या गुणों का समूह है जिसे मनुष्य अपने संस्कारो तथा वातावरण के आपसी माहौल के माध्यम से अपनाकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है तथा अपने व्यक्तित्व को उज्ज्वल बना सकता है। मानव के मूल्य मे मनुष्य की अवधारणा, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था या निष्ठा जैसे मानवीय गुणों का समावेश होता है। साधारण रूप में ये राष्ट्रीयता, नैतिकता, मानवीयता और आत्म–विश्वास ही वास्तविक मूल्य है। गीता में भी इन्हीं मूल्यों को दर्शाया गया है। वेदों तथा उपनिषदों में जिन नैतिक और दर्शनिक सिद्वान्तों का प्रतिपादन किया गया है, गीता उनमे समन्वय स्थापित करके उनका सारतल प्रस्तुत करती है। इसीलिए सदियों से गीता देशवसियों के लिए महान प्रेरणा की पुंज कही है, और आज भी है। भारत तथा अन्य देशों के अनेक महान विचारकों ने अपने दार्शनिक सिद्वान्तो के अनुसार अलग–अलग प्रकार से गीता की व्याख्या की है। गांधी जी लोकमान्य तिलक और श्री अरविन्द का मानना है कि गीता में निष्काम कर्म को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। इस प्रकार प्राचीन काल में वर्तमान युग तक गीता समस्त दार्शनिक विचार भारतीय चिन्तन एवं दर्शन को निरन्तर प्रभावित करती रही है। और यह व्यापक प्रभाव उसके महत्व को दर्शाता है।

गीता में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। भगवान ने मनुष्य के लिए उचित कर्तव्यों को बड़ी सरलता से बताया है। इसमें मनुष्य के लिए आचरण के आदर्शो को स्थापित किया गया है। इसीलिए कर्तव्यों के निर्धारण के लिए गीता को आदर्श ग्रन्थ माना जाता है।

श्रीमत् भगवत गीता में योग विचार बहुत महत्वपूर्ण है। योग शब्द सम्बंध वाचाक है। आत्मा और परमात्मा के सम्बंध, जीव और शिव के समन्वय का सिद्वांत ही योग है। जीवन ओर ईश्वर के तीन प्रकार के है– कर्म योग भक्तियोग और ज्ञान–योग। इन तीनों का वर्णन गीता में किया गया है। कर्मयोग गीता का सबसे महत्वपूर्ण विषय है। सम्पूर्ण गीता का प्रमुख उद्देश्य मोहबन्धन में बंधे एवं कर्तव्य से विचलित अर्जुन को अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्व लडे जाने वाले युद्व में कर्मयोग का ही मौक्ष में अतियोग को भी महत्वपूर्ण बताया गया है। भक्ति शब्द का अर्थ है। सेवा करना। अर्थात सेवा के या भक्ति के द्वारा भगवान से जुडना। भक्ति विमोर होकर मनुष्य सब कुछ भूल जाता है और वह भगवान को ही सब जगह देखता है। इसी प्रकार अर्जुन श्री कृष्ण की शरण में जाकर कहते हैं। कि मुझसे उचित मार्ग का ज्ञान करायें, मैं आपकी शरण में जाकर कहते हैं कि मुझे उचित मार्ग का ज्ञान करायें। मैं आपकी शरण में हूँ। अन्त में भगवान अर्जुन से कहते है कि तुम सब धर्मो का परित्याग कर मेरी शरण में आ जाओ, मै तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूंगा।

कर्मयोग भक्ति योग के अतिरिक्त कृष्ण ने ज्ञान योग के बारे में बताया है। ज्ञानयोगी आत्मरूप को परमात्मा का स्वरूप समझता है। संसार के निःसार तथा आत्मा को परमात्मा स्वरूप समझना ही ज्ञान योग है। संपूर्ण संसार को वही वह अपना परिवार समझता है। ज्ञानी आत्मा को सब भूतों में स्थित देखता है। तथा सब भूतों को आत्मा में स्थित देखता है। गीता में ज्ञान योगी को समदर्शी कहा गया है।

वस्तुवः गीता में भक्ति ज्ञान और –कर्म तीनों को सम्मिलित किया गया है। तीनों मे से किसी को कम या अधिक महत्वपूर्ण नही कहा जा सकता। तीनो योगो का समन्वय भगवान ने गीता में स्वंय किया है। गीता में ज्ञान को आध्यात्मिक चेवना के उत्तरोत्तर क्रमिक विकास के सोपान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह दो प्रकार के ज्ञान का प्रतिपादन करती है। एक वह जो बुद्वि के द्वारा बाहय जगत के अस्तित्व को समझने का प्रयत्न करता है और दूसरे वह जो अर्न्तदृष्टि के बन से उसे ग्रहण करता है। आज के चिन्तन में व्यक्तिवादी और समाजवादी दो विरोधी विचार धाराओं का द्वन्द हो रहा है। और उसके कारण मानव कल्याण की कल्पना में , उसकी योजना और प्रयास में भी ऐसा विरोध उत्पन्न हो गया है कि लोक जीवन में इशरों जैसी पड़ गई है। धर्म को वो प्रायः लोक जीवन में असम्बद्व मान ही लिया गया है। लौकिक जीवन का धर्मनिरपेक्ष और धर्म जीवन को लोकगीत कह देना अभयास में आ गया

है। गीता के भूमिका में मानव जीवन इस प्रकार कृत्रिम रूप से विभक्त नहीं है। उसका सर्वाग परिपूर्णता में है। मानव जीवन की संरचना को देखकर ऐसा लगता है। कि उसका समाष्टिगत विशाल विकास व्यक्ति–व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर होगा, क्योंकि व्यक्ति ही उसकी मूलभूत इकई हैं।

**सन्दर्भ–सूची**


01. श्रीमत् भगवत गीता।
02. मधुसूदन सस्वती, गीता पर टीका–6/29।
03. गीता–4/34।
04. गीता–15/19।
05. मैक्समूलर, सिक्स सिस्टम आफ इण्डियन फिलासफी।
06. बाल गंगाधर तिलक, गीता रहस्य।
07. राधा कृष्णन, श्री मत् भगवत् गीता, पृष्ठ–21।
08. उमाशंकर शर्मा, सर्वधर्मसंग्रह, पृष्ठ–223।
09. श्री अरविन्द, एससे आन द गीता, पृष्ठ 195।ण
10. श्री अरविन्द, गीता प्रबन्ध, पृष्ठ 42।